

# Let Your Light So Shine Before Men

## दीपक

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये  
उजियाला है। भजन संहिता 119:105

### प्रसन्नसा (Appreciation)

यह कहा गया है कि हम कुछ चीजों की सराहना तब तक नहीं करते जब तक कि हम उन्हें खो ना दें। हाल ही में हमें एक मसीही भाई द्वारा भेजा गया एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने अपनी सूंघने की शक्ति वापस मिलने की खुशी जाहिर की थी। यह हमारे लिए एक सामान्य बात है कि हम फूलों की सुगन्ध को महसूस कर सकते हैं, पेड़ से गिरते हुए पत्तों को देख सकते हैं, वर्षा की बूटों का पटपटाना सुन सकते हैं और हवा की ठण्डक को महसूस कर सकते हैं। लेकिन जब हमारी आंखें धुंधला देखने लगती हैं और हमारे कान चिड़ियों का चहकना सुनना बंद कर देते हैं तो हम अपने परमेश्वर की सराहना करते हैं जिसने हमें ये शक्तियां दी और जिनको हम साधारणतया लेते थे।

यही बात हमारे आत्मिक वरदानों के लिए भी है। हमें याद है कुछ वर्षों पहले जब एक नवयुवती बाईबल स्कूल में आयी तो वह, उस सच्चाई और उद्धार की उस आशा को जानकर, भौंचक्की रह गयी, जिसको हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है और जिसको अधिकांश नौजवान लोग साधारणतया लेते हैं। केवल उसी जवान लड़की ने इन बातों को सीखा और इस सच्चाई को जानकर उसकी आंखें चकाचौंध हो गयी जबकि अन्य लोग इस आश्चर्यजनक आशा के प्रति बहुत ही बेपरवाह लग रहे थे। हमारे बाईबल स्कूल के अध्यापक ने उसे बताया कि जो लोग अभी-अभी रोशनी में आये हैं वे इसकी चमक से, उन लोगों की अपेक्षा अधिक चकाचौंध होते हैं जो इस रोशनी में पहले से हैं और इसके आदि हो गये हैं।

जब हम इस सच्चाई को पहचान लेते हैं तो हमें, उन लोगों की अपेक्षा, जो इसे साधारणतया लेते हैं, प्रतिदिन इन बातों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। अपने इस जीवन के लिए परमेश्वर को दिया गया धन्यवाद हमें नम्र और प्रसन्न बनाये रखेगा। इसलिए बहुत से लोग प्रसन्न नहीं हैं क्योंकि वे उन आशीषों को नहीं जानते जो उन्हें मिली हैं। हर एक सुबह जब हम अपने बिस्तर से उठते हैं तो हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें स्वस्थ रखा और हमें सामर्थ्य दी कि हम उठ सके, क्योंकि करोड़ों लोग ऐसे हैं जो अपने बिस्तर से नहीं उठ सकते। जब हम खाना खाते हैं तो हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें पोषण के लिए वह खाना दिया। हम अब उन करोड़ों लोगों के विषय में सोचते हैं जिनके पास खाने को कुछ नहीं है और जो भूख से मर रहे हैं। तो क्या हम यह शिकायत करते हैं कि हमारे खाने में नमक कम है या वह स्वादिष्ट नहीं है?

एक व्यक्ति के विषय में एक कहानी है जिसे यह शिकायत थी कि उसके पास जूतें नहीं थी; और उसकी यह शिकायत तब खत्म हो गयी जब उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसके पैर नहीं थे। तो क्या परमेश्वर की दृष्टि में हम ऐसे विवाद या शिकायत करने वाले व्यक्ति हैं जो हमें मिली सभी आशीषों के प्रति कृतघ्न हैं? एक बहुत ही अच्छा अभ्यास है कि हम उन सब बातों की एक लिस्ट बनाये जिनके लिए हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना है। अगली बार जब हम प्रार्थना करें तो उन सब चीजों के लिए प्रार्थना करें जो उसने हमें दी है ना कि हम उन चीजों के लिए प्रार्थना करें जो हमें चाहिए।



दाऊद जब बूढ़ा था तो उसने एक बहुत ही अच्छी बात कही। उसका यह विचार हमें याद रखना चाहिए। उसने कहा, "मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है। वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है, और उसके वंश पर आशीष फलती रहती हैं" इस विचार में जबरदस्त सुख है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हम परमेश्वर के वंश हैं और हमें पौलुस की उस बात को याद रखना चाहिए जो वह गलतियों के लोगों से कहता है कि हम किस प्रकार परमेश्वर के वंश हो सकते हैं। सच्चाई यह है कि यदि हम परमेश्वर के वंश हैं तो ही वह हमें सब कुछ देता है। वह हमेशा हमें वह नहीं देता जो हमें चाहिए लेकिन वह हमेशा हमें वह देता है जिसकी हमें आवश्यकता है। हम भी माता और पिता हैं और हम इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि यदि हम अपने बच्चों से प्यार करते हैं तो हम उन्हें वे सब चीजें नहीं देते जो वे हमसे चाहते हैं। एक बुद्धिमान व्यक्ति, सुलेमान, जो बहुत ही धनी राजा था, उसने हमें सिखाया कि हमें यह कहकर

प्रार्थना करनी चाहिए कि, “मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाये, तब मैं इन्कार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? वा अपना भाग खोकर चोरी करूँ, और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूँ।”

धन्यवाद एक ऐसी चीज है जो हमें प्रतिदिन देना चाहिए क्योंकि धन्यवाद देने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है तो आओ हम उस हर एक आशीष के लिए अपने स्वर्गीय पिता का धन्यवाद करें जो उसने हमें दी है, आओ हम उसके छोटे से छोटे पुरस्कार को भी साधारणतया न लें और उसके लिए उसका धन्यवाद करें। हम जानते हैं कि वह छोटे से छोटे लोगों की छोटी से छोटी बातों का ध्यान रखता है क्योंकि प्रभु यीशु हमें बताते हैं कि यहां तक कि हमारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं। यह जानकर आओ हम उत्साह के साथ उसका धन्यवाद करें, क्योंकि, “यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है। परखकर देखों कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह व्यक्ति जो उसकी शरण लेता है।”

‘प्रसन्नसा’ (Appreciation) is taken from ‘Minute Meditations’ by Robert J. Lloyd

## परमेश्वर का यीशु के साथ सम्बन्ध (The Relationship of God with Jesus)

---

एक एकलौता पुत्र जो पूर्णतया विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी था- जिसने अपने पिता की सभी इच्छाओं को पूरा किया और अपने पिता के प्रेम को इस संसार के लिए प्रदर्शित किया। इस प्रकार बाईबल परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु का, वर्णन करती है। परमेश्वर और यीशु के बीच, एक प्यार करने वाले और समर्पित, पिता और एक, पूर्णतया आज्ञाकारी, पुत्र का सम्बन्ध है। यह एक सबसे बड़ा सम्बन्ध है और अनुसरण करने के लिए हमारे लिए एक सबसे अच्छा उदाहरण है।

---

मुख्य पद - मत्ति 3:13-17

जब यीशु 30 वर्ष के थे तो वे उन कार्यों को करने के लिए पूरी तरह से तैयार थे, जिनको करने की उनके पिता ने उनके लिए योजना बनायी थी। उनको एक ऐसा प्रचारक बनना

था जिसको पूरे संसार को बदलना था और सम्पूर्ण धार्मिकता को पूरा करने के लिए उनके सभी कार्यों की रूपरेखा परमेश्वर द्वारा उनको दी गयी। यीशु ने जो बपतिस्मा लिया वह मनफिराव या पापों की क्षमा के लिए नहीं लिया, जैसा कि हम सब करते हैं, बल्कि यह उनकी अपने पिता के लिए आज्ञाकारिता और प्रेम को प्रदर्शित करने का एक हिस्सा था। परमेश्वर ने अपने पुत्र के लिए अपनी भावना को, स्वर्ग से बोले गये इन शब्दों के द्वारा, प्रकट किया, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ” एक प्यार करने वाला पिता सबको सुनाते हुए अपने आज्ञाकारी पुत्र की प्रसन्नता कर रहा है।



1. जब परमेश्वर के पुत्र ने बपतिस्मा लिया तो परमेश्वर क्यों इतना प्रसन्न था?
2. यह पहली बार नहीं था जब परमेश्वर लोगों को अपने बच्चे कहता है। (यशायाह 45:11 देखें) तो किस प्रकार यीशु का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ, अन्य लोगों की अपेक्षा जिनको वह अपना पुत्र कहता है, भिन्न था?
3. यीशु के बपतिस्मा लेने के शीघ्र बाद, यूहन्ना बपतिस्मादाता उनको परमेश्वर का मेमना कहता है। (यूहन्ना 1:29,36) परमेश्वर और यीशु के सम्बन्ध के विषय में यह दृश्य हमें क्या बताता है?

## परमेश्वर का प्रिय पुत्र

यीशु के जीवन में कई अवसरों पर परमेश्वर ने उन्हें अपना प्रिय पुत्र कहा। चरवाहों और ज्योतिषियों को उनके जन्म की घोषणा के बाद, परमेश्वर का यीशु के लिए प्रेम उस चेतावनी से प्रकट होता है जो उसने यूसुफ को दी कि वह हेरोदेस से बचकर परिवार को लेकर मिस्र को चला जाये। (मत्ति 2:13-18)

उनके पुनः इस्राएल आने के बाद परमेश्वर ने परिवार को नसारत जाने के लिए कहा जहां यीशु सुरक्षित रूप के साथ बढ़ सकते थे। जैसे-जैसे यीशु बढ़ते गये वे परमेश्वर के और भी प्रिय होते गये। बालक यीशु बुद्धि में और परमेश्वर के प्रेम में बढ़ते गये और परमेश्वर का अनुग्रह उन पर था। उनके लिए यह स्वाभाविक था कि (12 वर्ष की आयु में) येरूशलेम “अपने पिता के घर” में मन्दिर में जाकर प्रचार करें। अपने पिता के साथ वहां समय व्यतित करना उनके लिए स्वाभाविक था। सभी बच्चे बढ़ते हैं और सीखते हैं और यीशु ने सिखा की उनका पिता उनका परमेश्वर भी है और अपने पिता का आज्ञाकारी रहना चाहिए। यीशु के जीवन के इस समय के विषय में हम बहुत ही कम जानते हैं,

लेकिन इससे हमें एक संदेश अवश्य मिलता है कि वह, “बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया” (लूका 2:41-52)

### यीशु का परमेश्वर के लिए सम्बोधन और उनका सम्बन्ध

मेरा परमेश्वर	मत्ति 27:46; प्रकाशितवाक्य 3:12
मेरा परमेश्वर और तुम्हारा परमेश्वर	यूहन्ना 20:17
मेरा पिता	मत्ति 16:17,18,19; लूका 2:49
पिता, पुत्र से प्रेम रखता है	यूहन्ना 3:35; 5:20; 10:17
पिता ने मुझे भेजा है	लूका 4:43; यूहन्ना 5:37; 6:57; 8:42; 10:36; 12:49; 17:21,25; 20:21
मेरा पिता मुझ से बड़ा है	यूहन्ना 14:28
मैं पिता के कारण जीवित हूँ	यूहन्ना 6:57
मैं और पिता एक हैं	यूहन्ना 10:30
मेरे पिता ने मुझे सबकुछ सौंपा है	मत्ति 11:27
मेरी नहीं बल्कि तेरी (परमेश्वर की) इच्छा पूरी हो	लूका 22:42
पुत्र केवल वही करता है जो वह पिता को करते देखता है	यूहन्ना 5:19
अपने दाहिने बायें किसी को बिठाना मेरा काम नहीं (पर पिता का)	मत्ति 20:23

### दुख उठाकर आज्ञा मानना सीखा

अपने आनन्द में और अपने दुखों में, अपनी गवाही के साथ यीशु ने सीखा की अपने पिता की आज्ञाओं को मानना कितना आवश्यक है। जब भी यीशु अपने पिता के विषय में बात करते हैं तो हमें परमेश्वर के सम्मुख उनकी स्थिति का पता चलता है। यीशु अपने विषय में बताते हैं कि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है; परमेश्वर की सामर्थ के बिना वे कुछ नहीं कर सकते; उनका न्याय परमेश्वर का न्याय था। यीशु ने कहा कि उनका पिता उनसे बड़ा था। परमेश्वर का एक सेवक होने के रूप में उन्हें एक कार्य करने को दिया गया था जो उन्होंने किया।

यीशु के रूपान्तर के समय और उसके बाद गदसमनि में, परमेश्वर अपने पुत्र के बहुत अधिक निकट था। बहुत ही विशेष तरीके से परमेश्वर ने यीशु की सहायता के लिए अपनी इच्छा को प्रकट किया जिससे कि वह क्रूस पर मृत्यु की उस भयानक पीड़ा का सामना साहस के साथ कर सकें। बड़े दुख की बात है कि मानवजाति के पापों के कारण यीशु का

इस संसार के लिए मरना आवश्यक था, क्योंकि इस संसार को बचाने का और कोई दूसरा तरीका नहीं था। परमेश्वर का प्रिय पुत्र होने के कारण यीशु का कर्तव्य था कि वह अन्त तक अपने पिता की आज्ञा का पालन करें और अपनी दुःख और पीड़ाओं के द्वारा आज्ञा मानना सीखें। (इब्रानियों 5:8)

## परमेश्वर और यीशु के बीच भिन्नता

बाइबल से परमेश्वर और यीशु के बीच हम निम्नलिखित भिन्नताएँ देख सकते हैं:

### परमेश्वर

परमेश्वर की परीक्षा नहीं हो सकती है

(याकूब 1:13)

परमेश्वर नहीं मर सकता

(1 तीमुथियुस 6:16)

परमेश्वर सबकुछ जानने वाला सर्वज्ञाता है

(1 यूहन्ना 3:20)

परमेश्वर सदा विराजमान है

(भजन 92:8; दानियेल 4:34)

### यीशु मसीह

यीशु सब बातों में हमारी नाई परखे गये

(इब्रानियों 4:15)

यीशु मरे

(1 कुरिन्थियों 15:3-4)

यीशु ने सीखा

(यूहन्ना 15:15)

परमेश्वर ने यीशु को विराजमान किया

(प्रेरितों 5:31; फिलिप्पियों 2:9)

अन्य दूसरी कौन सी भिन्नताएँ आप बाइबल से खोज सकते हैं?

## महिमा में लिया जाना

पुनरुत्थान के बाद यीशु स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने ओर बैठने के लिए ले लिये गये ताकि वे फिर से कभी मृत्यु की पीड़ा को न सहे। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे इस संसार के लिए अपना जीवन बलिदान कर देंगे तो वे फिर से जीवित होंगे। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद तीसरे दिन सुबह सवेरे परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया और अपने पुत्र को जीवित किया और उनको वह स्थान दिया जो इस ब्रहमाण्ड में सबसे बड़ा है। यीशु, परमेश्वर और मानवजाति के बीच, एकमात्र बीचवर्ई, महायाजक और उद्धारकर्ता हो गये जिनके द्वारा सभी का मनफिराव और क्षमा सम्भव है। यीशु अपने पिता के साथ पूर्णतया एक हो गये। (फिलिप्पियों 2:9-11; 1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 4:14-15; प्रेरितों के काम 5:30-31)

## त्रिएकता

आज लगभग सभी मसीही कलीसियाएँ यह सिखाती हैं कि यीशु और उनका पिता और पवित्र आत्मा तीनों ही त्रिएक परमेश्वर हैं। त्रिएकता में विश्वास करने वाले अधिकांश लोग मानते हैं कि यीशु, उनके पिता और पवित्र आत्मा ये सभी, “बराबर”, “अविनाशी”, “अजन्में”, “सर्वशक्तिमान”, और “परमेश्वर” हैं। यह विचार बाईबल के अनुसार नहीं है। यीशु ने कभी भी अपने आप को परमेश्वर के तुल्य नहीं कहा; उन्होंने लगातार कहा कि, “मेरा पिता मुझ से बड़ा है” (यूहन्ना 14:28) यहां तक कि वे परमेश्वर को “मेरा परमेश्वर” कहते हैं। (यूहन्ना 20:17; प्रकाशितवाक्य 3:12) बाईबल यह भी नहीं बताती है कि यीशु परमेश्वर के समान ही अविनाशी और अजन्में हैं; उन्होंने एक बालक के रूप में पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत की, जबकि उनका पिता सदा सर्वदा से विद्यमान था।

## पुनःआगमन

प्रभु यीशु मसीह पुनः इस पृथ्वी पर आ रहे हैं। वे अपने पिता के पास से आकर पृथ्वी पर तब तक राज्य करेंगे जब तक कि अन्तिम शत्रु (मृत्यु) का नाश न हो जायें। मृत्यु के नाश होने के बाद यीशु राज्य को अपने पिता को सौंप देंगे। फिर पुत्र आप भी उसके अधीन हो जायेगा जिस ने सब कुछ उनके अधीन कर दिया (1 कुरिन्थियों 15:24-28)

## सारांश

पिता के रूप में परमेश्वर:

- जिसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह से प्रेम किया।
- जिसने अपने पुत्र यीशु का निर्देशन किया और उसको आज्ञायें दी।
- जिसने हर बात में अपने पुत्र की सहायता की।
- जिसने आज्ञाकारिता के लिए अपने पुत्र को पुरस्कृत किया।

पुत्र के रूप में यीशु:

- जिसने अपने परमेश्वर और पिता का सम्मान किया और उससे प्रेम किया।
- जिसने अपने पिता की इच्छाओं को पूरा किया।
- जो कष्ट सहने के बाद भी अपने पिता का आज्ञाकारी रहा।
- जिसने अपने पिता के प्रेम और आशीषों को प्राप्त किया और जो पिता द्वारा राज्य दिये जाने की प्रतिक्षा में हैं।

## विचारणीय पद

1. यीशु के समय में परमेश्वर ने स्वर्ग से कई बार उनके विषय में बोला। इन सभी पदों को बाईबल से देखिए कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में क्या कहा था? किसके लाभ के लिए ये बातें कही गयीं?
2. यूहन्ना 5:18 में जब यीशु ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहा तो यहूदियों ने कहा कि वे ऐसा कहकर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य बता रहे थे। पद 19 में यीशु ने उन्हें उत्तर दिया। क्या उन्होंने कहा कि यहूदी सही कह रहे थे?

## अन्य खोज

1. जब यीशु अपने पिता और हमारे बीच में बीचवई हो गये तो उनके पिता के साथ उनका सम्बन्ध कैसे बदल गया?
2. परमेश्वर का यीशु के साथ सम्बन्ध, पिता और पुत्र के बीच सम्बन्ध का एक उत्तम उदाहरण है। इससे हम अपने जीवन में अपनाते के लिए क्या सीख सकते हैं?

‘परमेश्वर का यीशु के साथ सम्बन्ध’ (The Relationship of God with Jesus) is from ‘The Way of Life’, edited by Rob J. Hyndman

Printed Book

To,

कृपया निःशुल्क हिन्दी पुस्तिका “परमेश्वर एक या अनेक (त्रिएक)?” और हिन्दी बाईबल पत्राचार पाठयक्रम हेतू हमारे निम्न पते पर सम्पर्क करें --

"दीपक" पत्रिका और अन्य पुस्तिकाओं हेतू पता:

पत्राचार पाठयक्रम हेतू पता:

दि क्रिस्टडेलफियन

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. - 10, मुजफ्फरनगर (यूपी) - 251002

पो. बा. न. - 50, गाजियाबाद (यूपी) - 201001

ई-मेल: cdolph\_mzn@yahoo.in

ई-मेल: christadelphiansdelhi@gmail.com

केवल व्यक्तिगत वितरण हेतू